पुष्पा सक्सेना का कहानी साहित्य : स्त्री विमर्श के विशेष संदर्भ में

हिन्दी विषय में पी-एच.डी. उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु

प्रस्तावित रूपरेखा

शोधकर्त्री

रागिनी जैन

शोध निर्देशिका

प्रो. शर्मिला सक्सेना

हिन्दी विभाग, कला संकाय

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)

दयालबाग़, आगरा – 282005

2024

पुष्पा सक्सेना का कहानी साहित्य : स्त्री विमर्श के विशेष संदर्भ में

शोध परिचय :

साहित्य समाज का वास्तविक प्रतिबिम्ब होता है। साहित्य के माध्यम से साहित्यकार विभिन्न प्रासंगिक विषयों पर अपनी लेखनी चलाते हैं। समाज में जो भी घटित होता है, साहित्यकार उससे अछूते नहीं रहते। समाज में घट रही घटनाएँ प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से साहित्यकार को प्रभावित करती हैं और इन्हीं घटित वास्तविकताओं का चित्रण साहित्यकार साहित्य के माध्यम से करते हैं।

प्रारम्भ में साहित्य रचना केवल मनोरंजन के लिए होती थी किन्तु वर्तमान समय में साहित्य का उद्देश्य अत्यन्त व्यापक है। अब साहित्यकार प्रासंगिक विषयों पर साहित्यिक रचना कर, वास्तविक यथार्थ को समाज के समक्ष प्रस्तुत करते हैं।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, **"प्रत्येक देश का साहित्य वहां की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब होता है।"** परिणामतः कहा जा सकता है कि जनता की चित्तवृत्ति के परिर्वतन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है।

साहित्य की विभिन्न विधाओं जैसे - कहानी, नाटक, उपन्यास, कविता आदि पर साहित्यिक रचनाएँ होती रही हैं। बदलते परिवेश और साहित्य के विकास के साथ-साथ विभिन्न विमर्शों का जन्म हुआ। विमर्शों की पृष्ठभूमि भारतीय नहीं अपितु पाश्चात्य है। धीरे-धीरे यह विमर्श भारतीय साहित्य से जुड़ते गए। साहित्यकारों ने समकालीन विमर्श - 'दलित विमर्श', 'स्त्री विमर्श', 'आदिवासी विमर्श' आदि प्रमुख विषयों पर साहित्यिक रचनाएँ प्रारम्भ की।

'स्त्री विमर्श' स्त्री की अस्मिता के लिए किया जा रहा संघर्ष है अर्थात स्त्री के अस्तित्व की रक्षा के लिए किया जाने वाला युद्ध। स्त्री की स्थिति का इतिहास काफी लम्बा रहा है। भारतीय ही नहीं अपितु पाश्चात्य संस्कृति में भी स्त्री की स्थिति कुछ विशेष अच्छी नहीं रही। पाश्चात्य देशों में स्त्री विमर्श फेमिनिज़्म (नारीवाद) नाम से जाना जाता था। पाश्चात्य देशों में ही सर्वप्रथम स्त्री मुक्ति के लिए आवाज़ बुलन्द की गई। 19वीं शती के उतरार्द्ध में फ़्रांस की राज्यक्रान्ति के कारण सामन्तवाद का अन्त तथा प्रजातन्त्र की स्थापना हुई, जिसमें पुरुष एवं स्त्री को समान अधिकार प्रदान किए गए। स्त्री विमर्श के बीज यहीं से अंकुरित होना प्रारम्भ हुए। इंग्लैण्ड के 'मेरी वॉल स्टोन क्राफ्ट' को इस आन्दोलन का सूत्रधार कहा जा सकता है क्योंकि उन्होंने स्त्री के अधिकारों के लिए आवाज़ बुलन्द कर एक साहसिक कदम उठाया। 19वीं शती के उतरार्द्ध में फ़्रांसीसी पुरुष लेखक 'जॉन स्टुअर्ट मिल' की पुस्तक 'अ सब्जेक्शन ऑफ वुमन' सामने आई, जिसमें स्त्री

अधिकारों की चर्चा की गई थी। 20वीं शती में 'वर्जीनिया वुल्फ़' की पुस्तक 'अ रूम ऑफ वन्स ओन' तथा फ़्रांस लेखिका 'सीमोन द बोउवार' की पुस्तक 'दि सेकंड सेक्स' में लेखिका ने बताया है कि स्त्री स्वयं नहीं बनती बल्कि उसे स्त्री बना दिया जाता है।

पाश्चात्य देशों में चल रहे इन नारीवादी संघर्षों का प्रभाव भारत पर भी पड़ा। भारतीय संस्कृति पर यदि दृष्टि डाली जाए तो ज्ञात होता है कि प्रारम्भ में स्त्री की स्थिति इतनी अधिक शोचनीय नहीं थी। प्राचीन समय में स्त्री को शिक्षा प्राप्त करने, यज्ञ-अनुष्ठानों में भाग लेने तथा स्वयंवर के चुनाव का अधिकार प्राप्त था किन्तु मध्यकाल में भारत में मुगल साम्राज्य के आगमन के साथ ही स्त्री की स्थिति में गिरावट आती चली गई। सती प्रथा, पर्दा प्रथा, बाल-विवाह आदि का प्रचलन प्रारम्भ हो गया। आधुनिक समय में विभिन्न समाज सुधारकों ने सती प्रथा, बाल-विवाह, विधवा-विवाह निषेध आदि कुरीतियों को समूल रूप से नष्ट करने की ओर कदम बढ़ाया। अंग्रेज़ी शासन काल की समाप्ति के पश्चात भारत स्वतन्त्र हुआ और भारत का अपना संविधान गठित हुआ, जिसमें स्त्री एवं पुरुषों को समान अधिकार प्रदान किए गए किन्तु स्त्री के साथ अधिकतर द्वितीय श्रेणी के नागरिक के समान ही व्यवहार किया जाता रहा। अत: स्त्री किस प्रकार से तमाम परिस्थितियों का सामना करती है, स्त्री विमर्श इसी का दस्तावेज़ है। स्त्री विमर्श में स्त्री जीवन की परिस्थितियों, कठिनाइयों एवं समस्याओं का यथार्थता के साथ अध्ययन किया जाता है।

स्त्री विमर्श पर अनेक साहित्यकारों ने अपनी लेखनी चलाई है, जिसके माध्यम से वह स्त्री की स्थिति की वास्तविक झांकी प्रस्तुत करना चाहते हैं। स्त्री विमर्श पर लेखन कार्य करने वाली हिन्दी की कथाकारों में 'राजेन्द्र बाला घोष', 'सुभद्रा कुमारी चौहान', 'मन्नू भण्डारी', 'ममता कालिया', 'मैत्रेयी पुष्पा', 'नासिरा शर्मा', 'मृदुला गर्ग', 'गीताश्री' आदि का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।**'पुष्पा सक्सेना'** भी उन लेखिकाओं में से हैं, जिन्होंने स्त्री विमर्श को अपनी रचनाओं में उकेरा है। प्रयागराज की साहित्यिक भूमि में **17 मार्च** को **पुष्पा सक्सेना** का जन्म हुआ। पिता तथा बहन की साहित्यिक गतिविधियों ने उन्हें अत्यधिक प्रभावित किया। अपने पिता तथा बड़ी बहन से प्रेरित होकर, उन्होंने भी अपने लेखन कार्य का श्रीगणेश किया। उनकी कहानियों के विषय यथार्थ वास्तविकताओं से जुड़े हुए हैं। वह लम्बे समय से अमेरिका में निवास कर रही हैं। अमेरिकी परिवेश का प्रभाव उनकी साहित्यिक रचनाओं में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

पुष्पा सक्सेना की कहानियों का प्रारम्भ अत्यन्त रोचक तरह से होता है और कहानी के अंत तक उत्सुकता तीव्र होती जाती है। उनकी प्रत्येक कहानी पाठक वर्ग को गहराई से सोचने पर विवश करती है। उनकी कहानियों में अत्यन्त प्रभावी

ढंग से स्त्री के मन की सतहों को पर्त-दर-पर्त खोला गया है। उनके साहित्यिक योगदान एवं श्रेष्ठ रचनाओं के लिए, उन्हें विविध प्रकार के सम्मान एवं पुरस्कारों से नवाज़ा गया है।

- बी.ए. (हिन्दी) में तीन गोल्ड मेडल से सम्मानित।
- वर्ष 2004 में 'ऑथर्स गिल्ड ऑफ इंडिया' पुरस्कार से सम्मानित ।
- सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार' से सम्मानित।
- मॉरीशस में 'इनोवेटिव विचार शील्ड' से सम्मानित।
- 'कमलेश्वर स्मृति कथा पुरस्कार' से सम्मानित।
- 'साहित्य संगम सम्मान' से सम्मानित।
- हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश द्वारा वर्ष 2014 में 'प्रवासी भारतीय हिन्दी भूषण सम्मान' से सम्मानित।
- मॉरीशस में आयोजित चतुर्थ विश्व हिन्दी सम्मेलन में स्टील आथॉरिटी ऑफ इंडिया के साथ प्रतिनिधित्व तथा अन्य प्रतिनिधि संस्थाओं और पत्रिकाओं द्वारा पुरस्कृत।
- साहित्यिक संस्था सुरभि, राँची द्वारा 'नागरिक सम्मान' से विभूषित।

शोध विषय की प्रेरणा एवं चयन :

साहित्य में शोध कार्य के लिए, किसी भी विषय को अपने शोध के अध्ययन का आधार बनाने से पूर्व, उसकी अवधारणा एवं विविध प्रतिमानों से परिचित होना अत्यन्त आवश्यक है। कहानी साहित्य की ओर मेरी रुचि प्रारम्भ से ही रही है। एम.फिल. में शोध कार्य के दौरान मुझे स्त्री विमर्श सम्बन्धी कहानियों को पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। कहानियों में उकेरी गई, स्त्री जीवन की अनछुई वास्तविकताओं ने मुझे स्त्री से जुड़े कहानी साहित्य की ओर उन्मुख किया। पीएच. डी. शोध कार्य हेतु विषय का चुनाव करने से पूर्व, मैंने कहानी साहित्य में स्त्री विमर्श पर कार्य करने की इच्छा को अपनी शोध निर्देशिका के समक्ष ज़ाहिर किया। शोध निर्देशिका ने मेरी इच्छा का सम्मान कर, मुझे इस विषय पर शोध कार्य करने के लिए उचित मार्गदर्शन प्रदान किया। मैंने पुष्पा सक्सेना के कहानी साहित्य को जैसे ही पढ़ना प्रारम्भ किया, वैसे ही इस विषय पर शोध कार्य का मेरा निश्चय और भी अधिक दृढ़ होता गया। शोध निर्देशिका द्वारा प्रस्तुत विषय को अपने शोध कार्य के अध्ययन का आधार बनाने के लिए समय-समय पर उत्साहित एवं प्रेरित किया गया। **"पुष्पा सक्सेना का कहानी साहित्य : स्त्री विमर्श के विशेष संदर्भ में"** शीर्षक का चुनाव करने में भी मेरी शोध निर्देशिका ने अत्यन्त महत्त्वपूर्ण

भूमिका का निर्वाह किया तथा मैंने इस विषय पर शोध कार्य करने का निश्चय किया।

शोध विषय का उद्देश्य :

किसी भी कार्य का एक निश्चित उद्देश्य होता है। उद्देश्य के अभाव में कार्य की सार्थकता सिद्ध नहीं होती। प्रस्तुत शोध कार्य के माध्यम से कहानी साहित्य में अभिव्यक्त स्त्री जीवन की वास्तविकता को यथार्थ की पृष्ठभूमि पर प्रस्तुत करने का सार्थक प्रयास किया जाएगा। कहानी में निहित सूक्ष्मातिसूक्ष्म पहलुओं की ओर ध्यान केन्द्रित कर, स्त्री जीवन से जुड़ी विभिन्न परिस्थितियों को चित्रित किया जाएगा। प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य स्त्री जीवन की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करना नहीं है अपितु स्त्री जीवन की समस्याओं एवं संघर्षो की ओर संकेत करना, इस शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य है। जिससे समाज उपदेशात्मक रूप में नहीं अपितु स्वयं उचित एवं अनुचित का निर्णय लेकर, स्त्री की स्थिति में नैसर्गिक परिवर्तन लाने का सार्थक प्रयास करेगा तथा इस समुचित परिवर्तन को चिरस्थायी रूप प्रदान किया जा सकेगा।

शोध विषय का महत्त्व :

साहित्य की विभिन्न विधाओं में कहानी एक ऐसी विधा है, जो सर्व-साधारण को अति शीघ्र अपनी ओर आकर्षित करती है। पाठक वर्ग कहानियों के साथ एक अन्तर्सम्बन्ध स्थापित कर, उसमें व्यक्त अनुभूतियों को स्वयं से जोड़कर अनुभव करते हैं। प्रस्तुत शोध विषय के अन्तर्गत पुष्पा सक्सेना की कहानियाँ स्त्री जीवन के वास्तविक आइने को सामने रखती हैं। स्त्री अस्मिता तथा स्त्री संघर्ष को समय की गंभीरता के साथ व्यक्त करना और समाज को जागरूक बनाकर, उनकी स्थिति में स्थायी परिवर्तन लाना ही सार्थक रूप में कार्य की सिद्धि हो सकेगी। शोध विषय **"पुष्पा सक्सेना का कहानी साहित्य : स्त्री विमर्श के विशेष संदर्भ में"** मौलिकता की दृष्टि से विशिष्ट महत्त्व रखेगा।

अनुसंधान पद्धति :

मनुष्य जन्म से ही जिज्ञासु प्रवृत्ति का होता है। अपनी इसी जिज्ञासा को शान्त करने हेतु वह निरन्तर खोज करता रहता है। मनुष्य की यही जिज्ञासु प्रवृत्ति उसे नित्य नवीन अनुसंधानों से परिचित कर, प्रगति की ओर उन्मुख करती है। साहित्यिक क्षेत्र में किए जाने वाले शोध एक नवीन विशेषता लिए हुए होते हैं, क्योंकि उसमें वास्तविक यथार्थ की अभिव्यक्ति होती है।

अनुसंधान ज्ञानार्जन का सशक्त माध्यम है। कठिन परिश्रम एवं लगन के साथ अनुसंधान कर, नवीन ज्ञान को अर्जित किया जा सकता है। अनुसंधान अथवा शोध की विभिन्न विधियाँ प्रचलित हैं। प्रस्तुत शोध कार्य में वर्णनात्मन, विवरणात्मक, विवेचनात्मक, विचारात्मक आदि पद्धतियों का प्रयोग किया जाएगा।

शोध विषय से पूर्व हुए शोध कार्य :

शोध कार्य हेतु मेरे द्वारा चयनित विषय **"पुष्पा सक्सेना का कहानी साहित्य : स्त्री विमर्श के विशेष संदर्भ में"** पर मेरे संज्ञान में अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। मेरे द्वारा शोधगंगा वेबसाइट एवं विविध विश्वविद्यालयों यथा : दिल्ली विश्वविद्यालय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय आदि के शोध सूची पत्रों को भली-भांति गहनता के साथ देखा गया है किन्तु किसी भी विश्वविद्यालय में मेरे द्वारा चयनित विषय पर कोई शोध कार्य मुझे दृष्टिगत नहीं हुआ है। इस प्रकार यह प्रमाणित हो जाता है कि मेरे द्वारा शोध कार्य के लिए चयनित विषय अभी सर्वथा अछूता है, इसीलिए यह विषय अपने आप में नवीन एवं मौलिक है।

शोध विषय की व्याप्ति :

किसी भी कार्य को सुचारु रूप से करने के लिए उसका नियोजन करना महत्त्वपूर्ण होता है। इसीलिए शोध कार्य के कुशल संचालन एवं उसे सुचारु रूप से सम्पन्न करने हेतु विषय का सुनियोजित होना अत्यन्त आवश्यक है। शोध कार्य की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने शोध विषय **"पुष्पा सक्सेना का कहानी साहित्य : स्त्री विमर्श के विशेष संदर्भ में"** को पाँच अध्यायों में विभक्त किया है।

प्रस्तावित रूपरेखा

पुष्पा सक्सेना का कहानी साहित्य : स्त्री विमर्श के विशेष संदर्भ में

1. प्रथम अध्याय - पुष्पा सक्सेना का व्यक्तित्व - कृतित्व एवं स्त्री विमर्श

1.1. पुष्पा सक्सेना : व्यक्तित्व-कृतित्व

1.1.1. व्यक्तित्व

1.1.2. कृतित्व

1.2. स्त्री विमर्श : एक परिचय

1.2.1. स्त्री विमर्श का अर्थ एवं परिभाषा

1.2.2. स्त्री विमर्श की अवधारणा एवं स्वरूप

1.2.3. भारतीय समाज और स्त्री

1.2.4. स्त्री विमर्श के विविध आयाम

1.2.5. हिन्दी कहानी साहित्य में स्त्री विमर्श

2. द्वितीय अध्याय - पुष्पा सक्सेना का कहानी साहित्य : सामाजिक, मनोवैज्ञानिक एवं आर्थिक जीवन में स्त्री

2.1. सामाजिक जीवन : स्त्री

2.1.1. रिश्तों का खोखलापन

2.1.2. लैंगिक विभेद

2.1.3. वेदना

2.1.4. दाम्पत्य जीवन की त्रासदी

2.1.5. दैनिक जीवन की समस्याएँ

2.1.6. प्रेम तथा संघर्ष

2.1.7. अन्य

2.2. मनोवैज्ञानिक जीवन : स्त्री

2.2.1. मानसिक यातना

2.2.2. मानसिक द्वन्द एवं तनाव

2.2.3. एकाकीपन की त्रासदी

2.2.4. अस्तित्वबोध

2.2.5. असंतोष की अभिव्यक्ति

2.2.6. अलगाव

2.2.7. अन्य

2.3. आर्थिक जीवन : स्त्री

2.3.1. अर्थ का जीवन में महत्त्व

2.3.2. पूँजीपति वर्ग की मानसिकता

2.3.3. उपभोक्तावादी दृष्टिकोण

2.3.4. टूटते रिश्तों का सच (अर्थ के सन्दर्भ में)

2.3.5. धनार्जन के लिए गलत तरीकों का प्रयोग

2.3.6. आर्थिक चेतना एवं स्त्री

2.3.7. अन्य

3. तृतीय अध्याय - पुष्पा सक्सेना का कहानी साहित्य : सांस्कृतिक, नैतिक एवं बदलते जीवन मूल्यों में स्त्री

3.1. सांस्कृतिक जीवन : स्त्री

3.1.1. पारम्परिक मान्यताएँ एवं रीति-रिवाज़

3.1.2. सांस्कृतिक मूल्यों में गिरावट

3.1.3. सांस्कृतिक आघात

3.1.4. भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति का द्वन्द

3.1.5. पाश्चात्य संस्कृति की स्तुति

3.1.6. अन्य

3.2. नैतिक जीवन : स्त्री

3.2.1. परिवर्तित नैतिक मूल्य

3.2.2. टूटते नैतिक मूल्य

3.2.3. अनैतिक सम्बन्धों का चित्रण

3.2.4. नैतिक मूल्यों को उकेरती स्त्री

3.2.5. संस्कृति एवं नैतिक मूल्यों का संघर्ष

3.2.6. अन्य

3.3. बदलते जीवन मूल्य : स्त्री

3.3.1. परिवर्तित आधुनिक जीवन मूल्यों में स्त्री

3.3.2. स्त्री अस्मिता की तलाश

3.3.3. प्रेम के प्रति बदलता दृष्टिकोण

3.3.4. स्त्री जीवन में निर्णयात्मक स्वतन्त्रता

3.3.5. स्त्री अधिकारों के प्रति सजगता

3.3.6. नारी सशक्तीकरण

3.3.7. अन्य

4. चतुर्थ अध्याय - पुष्पा सक्सेना का कहानी साहित्य : चरित्र-चित्रण एवं भाषा-शैली

4.1. चरित्र-चित्रण

4.2. भाषा

4.3. शैली

5. पञ्चम अध्याय - पुष्पा सक्सेना के समकालीन प्रमुख कहानीकार

उपसंहार

सन्दर्भ सूची

ग्रन्थ सूची :

- आधार ग्रन्थ
- सहायक ग्रन्थ
- पत्र-पत्रिकाएं
- शब्दकोश

ग्रन्थ सूची

आधार ग्रन्थ

1. उसका सच, डॉ. पुष्पा सक्सेना, यात्री प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1997
2. चाहट की आहट, डॉ. पुष्पा सक्सेना, साहित्य भंडार, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2018
3. ढाई आखर प्रेम का, डॉ. पुष्पा सक्सेना (सम्पादक - अशोक कुमार ज्योति), सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2021
4. तुम्हें पाकर, डॉ. पुष्पा सक्सेना, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2015
5. धूप-छाँव, डॉ. पुष्पा सक्सेना, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2023
6. पीले गुलाबों के साथ एक रात, डॉ. पुष्पा सक्सेना, पुस्तकायन, नई दिल्ली, संस्करण 1992
7. पुष्पा सक्सेना संकलित कहानियाँ, डॉ. पुष्पा सक्सेना, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2014
8. मीत मेरे तथा अन्य कहानियाँ, डॉ. पुष्पा सक्सेना, विभा प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2015
9. सूर्यास्त के बाद, डॉ. पुष्पा सक्सेना, यात्री प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1994

सहायक ग्रन्थ

1. नारी कल और आज, निश्तर खानकाही, गिरिराज शरण अग्रवाल, हिन्दी साहित्य निकेतन, उत्तर प्रदेश, संस्करण 2000
2. नारीवादी विमर्श, राकेश कुमार, आधार प्रकाशन प्रा.लि., हरियाणा, द्वितीय संस्करण 2004
3. भारत का इतिहास, रोमिला थापर, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली, संस्करण 1989
4. मानव मूल्य और साहित्य, धर्मवीर भारती, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, संस्करण 1999
5. यथार्थवाद, डॉ. शिवकुमार मिश्र, दि मैकमिलन कम्पनी ऑफ इंडिया, दिल्ली, संस्करण 1983
6. वर्तमान हिन्दी महिला कथा लेखन और दाम्पत्य जीवन, साधना अग्रवाल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 1995
7. स्त्री चिंतन की चुनौतियाँ, रेखा कस्तवार, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2006
8. स्त्री परम्परा और आधुनिकता, राजकिशोर, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2002
9. स्त्री मुक्ति के प्रश्न, रामविलास शर्मा, विकास प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2013
10. स्त्रीवादी साहित्य विमर्श, जगदीश्वर चतुर्वेदी, अनामिका पब्लिशर्स प्रा. लि., नई दिल्ली, संस्करण 2000
11. स्त्री विमर्श कमल और कुदाल के बहाने, रमणिका गुप्ता, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2010
12. समकालीन कहानी की पहचान, नरेन्द्र मोहन, प्रवीण प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1978
13. समकालीन कहानी युगबोध का संदर्भ, डॉ. पुष्पपाल सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, संस्करण 1986
14. समकालीन स्त्री विमर्श, क्षमा शर्मा, समसामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2010
15. समकालीन हिन्दी कहानी, डॉ. पुष्पपाल सिंह, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़, संस्करण 1987
16. साहित्यिक विधाएँ सिद्धान्त और विकास, डॉ श्रीनिवास शर्मा, के. एल. पचौरी प्रकाशन, गाजियाबाद, प्रथम संस्करण 2002
17. हिन्दी कहानियों की शिल्प विधि का विकास, डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद, संस्करण 1953
18. हिन्दी कहानी कला, डॉ. प्रतापनारायण टंडन, हिन्दी समिति, लखनऊ, प्रथम संस्करण 1970
19. हिन्दी कहानी का इतिहास (1976 - 2000), गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2016

20. हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास, सुमन राजे, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, संस्करण 2003

21. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, ज्ञान विज्ञान एजूकेयर, नई दिल्ली, संस्करण 2016

शब्दकोश

1. मानविकी पारिभाषिक कोश : साहित्य खंड, डॉ. नगेन्द्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 1969

2. संस्कृत हिन्दी कोश, वामन शिवराम आप्टे, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, दिल्ली, द्वितीय संस्करण 1969

3. हिन्दी पर्यायवाची कोश, डॉ. भोलानाथ तिवारी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1994

4. हिन्दी विश्वकोश (भाग 21), नगेन्द्रनाथ बसु, बी. आर. पब्लिशिंग कॉरपोरेशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1919